

भारतीय चित्रकला

गोपालकृष्ण



मदनी चैव्योसख जा पुनियहस्थ जंघनिते कीयो
 संचलियो वरुस्थल उपजे बनवास मस्तक हरे चोसंग
 नाते सकल पिता मेरे एक मोते उपजे सकल छनेक जा
 रे सोसो सब बंधन विसरि जा जा चंगा डते जो उपज्यो
 निपज्यो उच्यो तेजे उच्यो न विरगह ते सो नीचो
 ये सब जा बा ताते अनाम जाव समदम सत्य



७५ ई. भा.

गोपालकृष्ण